P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गांधी चिन्तन में सर्वोदय दर्शन

सारांश

सर्वोदय गांधी दर्शन का एक ऐसा महत्वपूर्ण पक्ष है जो उसके विचारों की तात्विक व आध्यात्मिक आस्था को भावी समाज की संरचना और मानव कल्याण की धारणा के साथ जोड़ता है। गांधी की सर्वोदय की धारणा गांधीय चिंतन की वैचारिक आस्थाओं, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया व स्वरूप राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व नैतिक व्यवस्थाओं के आदर्श प्रतिमान आदि को साथ प्रस्थापित करती है। गांधी के सर्वोदय की धारणा एक सम्पूर्ण व्यवस्था का प्रतिमान प्रस्तुत करती है। इस प्रतिमान का मूल्यांकन किसी पूर्वाग्रहग्रस्त सामान्य टिप्पणी की नहीं, अपितु गंभीर व तटस्थ गवेषण की अपेक्षा करता है।

सर्वोदय वस्तुतः गांधीय तत्व ज्ञान का रूपांतरण है। शब्दार्थ के आधार पर सर्वोदय एक ऐसी स्थिति का संकेत करता है। जिसमें सबसे कल्याण को एक साथ सुनिष्चित करने सर्वोदयी आग्रह राजनीतिक दर्शन का एक विलक्षण प्रयोग है। वस्तुतः राजनीतिक चिन्तन की कोई भी धारा मानवीय हितों की एकरूपता के उस स्तर की कल्पना नहीं करती, जहाँ सबके हितों के मध्य समस्त प्रकार के टकराव विलीन हो जाये। सर्वोदय चिन्तन के उस स्तर को व्यक्त करता है, जहाँ मानव मात्र के हितों के मध्य एक अनिवार्य एकरूपता और विलक्षण अद्वैत स्थापित हो जाता है। सर्वोदय कल्याण के नैतिक और आध्यात्मिक संदर्भो के प्रति समर्पित है और इस कारण वह सत्य के एकाकार हो जाने को उदय का उत्कर्ष मानता है।

मुख्य शब्द : गांधी, सर्वोदय, दर्शन, समाज कल्याण, विचारधारा, भूदान।

मीता सिंह
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
एस.डी.एम. कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
देशलपुर, नुना माजरा,
बहादुरगढ़, हरियाणा, भारत

प्रस्तावना

सर्वोदय से तात्पर्य सभी लोगों के कल्याण से है। चाहे वह किसी जाति धर्म का हो। सर्वोदय समाज पूंजीवाद व बुर्जुआ तत्वों से घृणा करता है। सर्वोदय धनी, माध्यम व निर्धन सभी का कल्याण चाहता है। सर्वोदय की विचारधारा को सही ढंग से समझने के लिए अन्य विचारधाराओं संघवाद, साम्यवाद, उपयोगितावाद में अंतर मालूम कर लेना चाहिए। सर्वोदय शब्द और विचार भारतीय संस्कृति के लिए नवीन नहीं है। सैकड़ो वर्षों से भारतीय ऋषिगण अपनी तपभ्रूत वाणी में 'सर्वे भवन्तु सुखिन' का संदेश देते रहे हैं। इसी प्रकार लगभग 2000 वर्ष पूर्व जैनाचार्य संमतभद्र कहते हैं। सर्वापदामंतकर निरंत सर्वोदय तीर्थमिदं तदैव अर्थात् सर्वोदय अन्तर्हित और सब आपत्तियों का विनाशक है, यह तेरा तीर्थ निस्तारक ही है। गीता के सर्वभूते हिते रताः का तात्पर्य भी सर्वोदय ही है, आज से नहीं वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति में सर्वोदय शब्द जुड़ा हुआ है। लेकिन विधिवत् रूप से इसे एक आधुनिक विचारधारा का रूप प्रदान करने का कार्य तथा इस विचार को लोगों तक पहुँचाने का कार्य राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया।

गांधी जी आदर्शवाद तथा अध्यात्मवाद में विश्वास करते थे, जिन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों की विवशता के कारण मानव मात्र की सेवा के लक्ष्य को सामने रखकर सार्वजनिक जीवन में पर्दापण किया। महात्मा गांधी ने जिस समय सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया, उस समय सामान्यतया यह विचार प्रचलित था कि सत्य और अहिंसा के नैतिकवादी सिद्धान्त तो केवल व्यक्ति जीवन के लिए ही है, जिन्हें सार्वजनिक जीवन में भी सफलतापूर्वक नहीं अपनाया जा सकता। लेकिन महात्मा गांधी इस धारणा के नितान्त विरूद्ध थे। इस सम्बन्ध में उनका विचार था कि व्यक्ति की दो अन्तरात्माएं नहीं हो सकती। एक व्यक्तिगत एवं सामाजिक और दूसरी राजनीतिक मानवीय कार्यों के सभी क्षेत्रों में एक ही नैतिक संहिता का पालन किया जाना चाहिए। इन्होंने सत्य व अहिंसा को सर्वोपरि माना। हमें सत्य और अहिंसा को केवल व्यक्तिगत व्यवहार ही नहीं वरन् संघों, समुदायों और राष्ट्रों के व्यवहार सिद्धान्त बनाना है।

गांधी के अनुसार, नैतिक समस्या ही मनुष्य जाति की सम्पूर्ण समस्या है। ऐसी स्थिति में मनुष्य यदि सभी अर्थों में मनुष्य बन जाए और अपने सारे सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक कार्यों को अन्तरात्मा की पुकार के अनुसार करे, तो समाज अथवा विश्व में दुख संकट तथा समस्या जैसी कोई चीज रह ही नहीं सकती है। एक स्वस्थ राजनीतिक समाज तथा विवेकशील व्यक्ति के प्रत्येक कार्य के पीछे एक नैतिक बल अथवा प्रेरणा होनी चाहिए क्योंकि जिस समय व्यक्ति कोई कार्य स्वार्थ के दृष्टिकोण से करता है तो उसमें उस समय पशु प्रवृत्ति का विकास होने लगता है। अपने इसी नैतिक दृष्टिकोण के आधार पर गांधी ने सार्वजनिक जीवन और विशेषतया राजनीति में सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त का प्रतिपादन और इनका सफलतापूर्वक प्रयोग किया। इस दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता है।

गांधीवादी विचारधारा अपने आप में पूर्णतया ठोस और व्यावहारिक होते हुए भी इसे सफलतापूर्वक अपनाने के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि व्यक्तियों का नैतिक चरित्र उच्च होना चाहिए। चरित्र से ही व्यक्ति का आकलन किया जाता है। यह कहा जाने लगा कि गांधीवादी विचारधारा एक ऐसे आदर्श का प्रतिपादन करती है, जिसे व्यवहार में अपना सकना संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में भारतवासियों के द्वारा एक ओर तो गांधी जी का गुणगान किया गया, लेकिन दूसरी और महात्मा गांधी तथा उनके विचारों के एक ऐसी वस्तु मान लिया गया, जो पूजा की वस्तु ही हो सकती है, अपनाने की नहीं। ऊँचें से ऊँचे स्वर में महात्मा गांधी की जय बोलने वाले भारतवासी व्यवहार में महात्मा गांधी के जीवन दर्शन को बिल्कुल ही भूल गए। इस विचारधारा को बहुत से लोगों ने अपने जीवन में अपनाया है और ऐसे कुछ व्यक्तियों में प्रमुख थे, विनोबा भावे। गांधी जी की मृत्यु के बाद संत विनोबा जैसे कुछ व्यक्तियों के द्वारा महात्मा गांधी की सर्वोदयी विचारधारा का अधिक से अधिक प्रचार और प्रसार करने तथा इसे क्रियात्मक रूप प्रदान करने का निश्चय किया गया।

सर्वोदय विचारधारा का प्रादुर्भाव भारत में ही हुआ था। विभिन्न लोगों ने इस विचारधारा को अपनाया। सर्वोदयी विचारकों में विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण, काका कालेलकर, शंकरराव देव, दादा धर्माधिकारी, सिद्धराज और ठाकुरदास बंग आदि के नाम प्रमुख हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं–

1. सर्वोदय की परिभाषा देते हुए इसका अर्थ स्पष्ट करना।
2. सर्वोदय के सन्दर्भ में गांधी के चिन्तन को स्पष्ट करना।
3. विनोबा भावे के विचारों से सर्वोदय की सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक व्याख्या करना।
4. सर्वोदय की अवधारणा एवं उपयोगितावाद में अन्तर करना।
5. सर्वोदयी समाज के आदर्शो की व्याख्या करना।
6. सर्वोदय के साधनों की व्याख्या करना।
7. सर्वोदय विचारधारा के गुण एंव दोषों का अध्ययन करना।
8. सर्वोदयी विचारधारा एंव कार्यक्रम का मूल्यांकन करना।
9. सर्वोदय के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सुझाव देना।

अध्ययन पद्धति

शोध विषय की व्याख्या और अध्ययन के उद्देश्य के उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि शोध विषय के आयाम सैद्धान्तिक, दार्शनिक एवं व्यावहारिक समस्त प्रकार के है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति के अनुरूप अध्ययन की पद्धति वर्णात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। सर्वोदय की अवधारणा के तात्विक आधारों के अभिज्ञान व व्याख्या हेतु यथासंभव गांधी एवं विनोबा भावे के मूल कथनों को आधार बनाया गया है। सर्वोदय की अवधारणा के व्यावहारिक पक्षों के वर्णन व विश्लेषण के लिए भी सामान्यतः गांधी एवं विनोबा भावे के मूल कथनों का आश्रय लिया गया है। विषय के अधिकारी विद्वानों के विचारों को भी यथावसर उपयोग किया गया है। जहाँ कहीं आलोचनात्मक टिप्पणियां की गई है, वह सदाशय व पूर्वाग्रह मुक्त है। निष्कर्ष विचारों के तार्किक वस्तुनिष्ठ व विवेकसम्मत धारणाओं व तथ्यों के अर्थान्वयन व विश्लेषण पर आधारित है।

साहित्यावलोकन

जब कोई अनुसंधान किया जाता है तो भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए किया जाता है। वर्तमान में किया गया अनुसंधान ही भविष्य का आधार बनता है। इसी प्रकार वर्तमान में किये जाने वाले अनुसंधान को करने से पूर्व उस विषय में किये गये पूर्व अनुंसधानों का सर्वेक्षण जरूरी होता है क्योंकि यह वर्तमान अनुसंधान की नींव है। इसलिए वर्तमान शोध विषय से सम्बन्धित प्रकाशित साहित्य का यहां अवलोकन किया गया है
यथा–

हरदान हर्ष ने अपनी रचना 'गांधी : विचार और दृष्टि' 1996 में लिखा है कि विज्ञान और तकनीकी विकास की चरम–सीमा पर तकली और चरखे की प्रासंगिकता को नकार सकते है, खादी को नकार सकते है, लेकिन गांधी द्वारा प्रतिपादित अहिंसक अर्थ–व्यवस्था को नहीं नकार सकते, ग्रामीण भारत के सर्वांगीण विकास में सबको रोजी रोटी के स्वप्न को नहीं नकार सकते। कोई भी आर्थिक तंत्र हो उसमें सामाजिक न्याय की हिमायत करते गांधी को न कोई आज नकार सकता है और न हजारो वर्ष बाद ही।

संदीप सिंह चौहान की रचना 'भारत में दलित चेतना': गांधी और अम्बेडकर, 2004 में लेखक ने भारतीय समाज संरचना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सामाजिक संरचना में दलितों का स्थान, दलित चेतना के उद्‌भव और विकास तथा दलित चेतना के विकास में गांधी व अम्बेडकर के योगदान का मूल्यांकन करने का प्रयास किया हैं।

डी0एस0 यादव ने अपनी रचना 'गांधी दर्शनः विविध आयाम,' 2012 में गांधी दर्शन के व्यापक आयामों पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत पुस्तक में गांधी दर्शन के प्रमुख आधार अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सत्याग्रह, असहयोग, सविनय अवज्ञा, महिला उत्थान, सर्वोदय, गांधीवाद और साम्यवाद, शाकाहार एवं ट्रस्टीशिप आदि विषयों पर गहन अध्ययन एवं शोधन किया गया है।

राजीव रंजन गिरि ने अपनी रचना 'गांधीवाद रहे ना रहे' 2018 में गांधी के विभिन्न विचारों एवं सिद्धांतों की वर्तमान समय में प्रांसगिकता का विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करते हुए बताया है कि गांधी के विचार विश्व में हमेशा प्रासंगिक रहेंगे।

सर्वोदय का आशय एवं विकास

सर्वोदय का अर्थ समाज के सभी वर्गो के कल्याण से है, चाहे वह किसी भी धर्म या जाति के हों। रस्किन की पुस्तक का गांधी पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। गांधी के शब्दों में यह पुस्तक मेरे जीवन का मोड़ बिन्दु लक्षित करती है। गांधी के द्वारा रस्किन की पुस्तक का गुजराती भाषा में सर्वोदय शीर्षक से अनुवाद किया गया। इस पुस्तक में प्रमुख रूप से तीन विचारों पर बल दिया गया था–

1. सबके हित में ही व्यक्ति का हित निहित है,
2. एक नाई का कार्य भी वकील के कार्य के समान ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि सभी व्यक्तियों को अपने कार्य से स्वयं की आजीविका प्राप्त करने का अधिकार होता है,
3. श्रमिक का जीवन ही एकमात्र जीने योग्य जीवन है। इसके अतिरिक्त गांधी पर रस्किन के एक विचार का विशेष प्रभाव पड़ा जिसमें कहा गया था कि, सम्पत्ति जल की भांति निर्धनों की ओर बहनी चाहिए। गांधी ने इस विचार को अपने जीवन का मूलमंत्र बना लिया। तीनों विचारों का गांधी के ऊपर अधिक प्रभाव पड़ा। सर्वोदय के नाम से गांधी ने एक मासिक पत्रिका निकाली जिसमें उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किये थे।

सर्वोदय का लक्ष्य आर्थिक कल्याण जहां धनिक वर्ग के सम्बन्ध में उसका लक्ष्य है। आध्यात्मिक कल्याण अर्थात् धनी वर्ग में अपरिग्रह और त्याग की भावना उत्पन्न कर उन्हें आत्मिक कल्याण की ओर आगे बढ़ाना। नागरिकों को सुख प्रदान करने की दृष्टि से सर्वोदय उपयोगिकता से भी आगे जाता है। जहां उपयोगितावाद अधिकतम व्यक्तियों को अधिकतम सुख प्रदान करना चाहता है, लेकिन सर्वोदय इसके विपरीत है। यह सभी के सुख की तरफ समर्थन करता है। विनोबा लिखते हैं कि अच्छी राज–व्यवस्था उसे ही कहा जा सकता है, जहां समस्त जनता सुखी हो। सर्वोदय उपयोगितावाद से एक और दृष्टि से भी आगे है। उपयोगितावाद का लक्ष्य व्यक्तियों का भौतिक कल्याण है, लेकिन सर्वोदय का लक्ष्य व्यक्तियों का भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार का कल्याण है। यह व्यक्ति के चतुर्मुखी विकास पर बल देता है।

विनोबा के शब्दों में, सर्वोदय कुछ का या बहुत का या अधिकतम का उत्थान नहीं चाहता। हम अधिकतम के अधिकतम सुख से सन्तुष्ट नहीं हैं। हम तो केवल एक की और सबको, ऊँचे और नीचे की, सबल और निर्बल की, बुद्धिमानी तथा बुद्धिहीन की भलाई से ही सन्तुष्ट हो सकते हैं। सर्वोदय शब्द इस उत्कृष्ट और सर्वव्यापक भावना को अभिव्यक्त करता है। इन्होंने आगे लिखा है कि जो दूसरे के दुःखों को समझता है तथा उसकी भलाई चाहता है, जिसमें केवल स्वयं का सुख न हो। सर्वोदय का तात्पर्य स्वयं परिश्रम करके भोजन करना चाहिए। हमें दूसरों की कमाई नहीं खानी चाहिए, अपना भार दूसरे पर नहीं डालना चाहिए। यहां पर कमाई का अर्थ है, प्रत्यक्ष उत्पादन से लगाया गया है। 25 दिसम्बर, 1975 को पवनार आश्रम में आयोजित सर्वोदय सम्मेलन में सर्वोदय क्या है? इस प्रश्न का एक बार और उत्तर देते हुए विनोबा ने कहा कि सर्वोदय सार्वजनिक क्षेत्र में स्वच्छ और कुशल प्रशासन, सर्वोदय सामाजिक व्यवस्था का आधार विकेन्द्रीकरण, सर्वोदय समस्त शक्ति जनता को प्राप्त होना, सर्वोदय अधिकारी वर्ग द्वारा अपने आपको जनता का स्वामी नहीं, वरन् सेवक समझना है।

विनोबा का मानना है कि व्यक्ति को सार्वजनिक क्षेत्र में सहनशील होना चाहिए। कितने भी गहरे मतभेद हो, लेकिन उनका व्यक्तिगत सम्बन्धों पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। हम किसी व्यक्ति द्वारा कहीं गयी बात से असहमत हो सकते हैं, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति किस बात को उचित समझता है, उसे वह करने का अधिकार है। इसी प्रकार हम अन्याय से लड़ेंगे लेकिन अन्यायी के प्रति हमारे मन में कोई दुर्भावना नहीं होनी चाहिए। विरोधी को भी प्रेम व सद्भाव के साथ देखेंगे, यह एक साहसपूर्ण कार्य है।

शंकराव देव ने सर्वोदय के आदर्श को इन शब्दों में व्यक्त किया है, अहिंसा और सत्य के आधार पर स्थापित वर्गविहीन और जातिविहीन तथा जिसमें किसी का कोई भी शोषण नहीं कर सकता और जिसमें प्रत्येक व्यक्ति तथा समूह को अपना सर्वांगीण विकास करने के लिए समुचित साधन और पर्याप्त अवसर उपलब्ध हो। इस प्रकार के समाज की स्थापना पर सर्वोदयी समाज बल देता है।

सर्वोदय की परिभाषा

सर्वोदय की परिभाषा विभिन्न समाजसेवियों ने अलग–अलग प्रकार से दी है – दादा धर्माधिकारी के शब्दों में, सर्वोदय का आदर्श है, अद्वैत और उसकी नीति है, समन्वय। सर्वोदय ऐसे वर्गविहीन, जातिविहीन और शोषण विहीन समाज की स्थापना करना चाहता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास के साधन और अवसर मिलेंगे। यह क्रान्ति अहिंसा और सत्य द्वारा ही संभव है। सर्वोदय इसी का प्रतिपादन करता है।

श्रीकुमारप्पा के अनुसार, सभी के कल्याण के रूप में सर्वोदय गांधी जी के अनुसार आदर्श सामाजिक

व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है। इसका आधार सभी के लिए प्रेम है। इसमें बिना किसी अपवाद के सभी के लिए स्थान है, चाहे कोई युवराज हो या साधारण कृषक, हिन्दू हो या मुसलमान, सवर्ण हिन्दू हो या हरिजन, गोरा या काला, संत हो या पापी। किसी व्यक्ति या समुदाय को दबाने, शोषित करने या भंग करने का इसमें भाव ही नहीं है। सभी इस सामाजिक व्यवस्था में समान रूप में भागीदार होंगे, सभी अपने श्रम का प्रयोग करेंगे, सबल निर्बलों की रक्षा और उनके संरक्षक के रूप में कार्य करेंगे और सभी सबके कल्याण का कार्य करेंगे।

सर्वोदयी समाज

गांधी की मत्यु 30 जनवरी 1948 में हुई। उसके पश्चात् सर्वोदयी समाज को आगे बढ़ाने में आचार्य विनोबा भावे का नाम प्रमुख है। आचार्य विनोबा भावे के सुझाव पर सर्वोदय समाज की स्थापना हुई और 22 तथा 23 दिसम्बर, 1949 को काका कालेलकर की अध्यक्षता में एक सर्वोदय आर्थिक सम्मेलन आयोजित किया गया। लगभग इसी समय वर्धा से एक हिन्दी पत्रिका सर्वोदय का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ जो बाद में मातृ भाषाओं में प्रकाशित होने लगी। धीरे–धीरे सर्वोदयी समाज के विकास में लोग सक्रिय रूप से भाग लेने लगे।

सर्वोदय और सर्वोदयी समाज के आदर्श

सर्वोदय आन्दोलन और सर्वोदय समाज के आधारभूत आदर्श निम्नलिखित हैं–

आर्थिक विकेन्द्रीकरण और समानता पर आधारित व्यवस्था

केवल राजनीतिक विकेन्द्रीकरण से काम नहीं होगा। आर्थिक विकेन्द्रीकरण भी अनिवार्य है। गांधी की भांति सर्वोदय भी मशीनचलित भारी उद्योगों के विरूद्ध है। उनका भी तर्क है कि औद्योगिकरण से धन और राजनीतिक सत्ता दोनों का केन्द्रीकरण होता है और शोषण को प्रोत्साहन मिलता है। मशीनें मनुष्य का स्थान ले लेती हैं और इससे बेकारी फैलती है। मशीनों के कारण मनुष्य की सृजन शक्ति और कलात्मक प्रवृत्तियां नष्ट होती हैं तथा मानवीय मूल्य गिर जाते हैं। इन सभी कारणों से सर्वोदय मशीनों का प्रयोग बहुत ही सीमित रूप में करने के पक्ष में है। आर्थिक विकेन्द्रीकरण में यह बात सम्मिलित है कि उत्पादन के साधनों पर राज्य या किन्हीं विशेष व्यक्तियों का अधिकार न होकर स्वयं उत्पादकों का ही अधिकार होना चाहिए।

उदाहरण के लिए, जिस भूमि पर जो खेती करे, वह उसी के अधिकार में रहे। सर्वोदय का सम्पत्ति सम्बन्धी दृष्टिकोण लगभग साम्यवादी है परन्तु उनकी प्रवृत्ति साम्यवाद के समान भौतिक होने के स्थान पर आध्यात्मिक है। वे सम्पत्ति की समानता तो स्थापित करना चाहते हैं, किंतु इसके लिए कानून या शक्ति का प्रयोग करने के पक्ष में नहीं हैं, वरन् वे यह कार्य व्यक्तियों के दृष्टिकोण में मूलभूत परिवर्तन करके करना चाहते हैं। डॉ. राधाकृष्णन् के शब्दों में, आचार्य विनोबा भावे ने जंगल के कानून को ठुकरा ही दिया। उन्होंने असेम्बली के कानून तक का सहारा नहीं लिया, बल्कि प्रेम के कानून के ऊपर उन्होंने अपनी श्रद्धा आधारित की है और यह प्रेम का ही कानून सबसे ऊँचा है। विनोबा भावे के इस कानून को भारत के प्रथम उप–राष्ट्रपति तथा द्वितीय राष्ट्रपति दार्शनिक डॉ. एस. राधाकृष्णन ने भी सराहा है। सर्वोदयी समाज की अर्थ–व्यवस्था में लाभ की प्रवृत्ति किराए या ब्याज के लिए कोई स्थान नहीं होगा, सभी कार्य सामाजिक हित की भावना से किए जाएँगे। प्रत्येक अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करे और आवश्यकता के अनुसार प्राप्त करे, यह समाज का आधारभूत नियम होगा। इसी से समाज का कल्याण होगा। जब समाज का कल्याण होगा तो देश का भी विकास होगा।

प्रतिनिध्यात्मक प्रजातंत्र और दलीय पद्धति पर आधारित व्यवस्था

भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के अन्य देशों में भी प्रजातांत्रिक व्यवस्था है। इसका सर्वोदय विरोध करता है। सर्वोदय के अनुसार यह तथाकथित प्रजातंत्र वास्तव में जनता का शासन नहीं वरन् दलीय पद्धति पर आधारित व्यवस्था है। इस शासन–व्यवस्था में राजनीतिक दलों के कारण शक्ति के लिए प्रबल होड़ सी लगी हुई है और किसी भी दल ने जनता के ही वास्तविक नियन्त्रण में रहकर शासन करने का उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया है। इस पद्धति ने ही समाज को तानाशाही शासन भी दिए हैं। प्रथम विश्व युद्ध के बाद इटली, जर्मन आदि राज्यों में जो तानाशाही शासन–व्यवस्थाएं स्थापित हुई वे तथाकथित प्रजातंत्र के दलीय शासन के परिणामस्वरूप ही ऐसा हुआ।

आधुनिक लोकतन्त्रात्मक व्यवस्था एक दिखाया मात्र भी है, क्योंकि सभी मुख्य प्रश्नों पर विचार तो पहले दल की सभाओं में कर लिया जाता है। उन्हें ससंद में उपस्थित करना तथा उन पर वाद–विवाद करना औपचारिक ही होता है। इस प्रकार आधुनिक लोकतन्त्र में संसद तथा सभाएं आडम्बर मात्र ही होती है।

इसमें दिखावापन अधिक होता है,जबकि इसमें वास्तविकता कम होती है। सर्वोदयी विचारक दादा धर्माधिकारी के अनुसार आज के लोकतन्त्र के तीन भयंकर दोष है – अधिकार का दुरूपयोग, गुण्डाशाही का भय और भ्रष्टाचार। इसके अतिरिक्त भारतीय लोकतन्त्र में दो अन्य दोष, सम्प्रदायवाद और जातिवाद भी है। इसी प्रकार जयप्रकाश नारायण लिखते हैं, दलीय राजनीति का परम्परागत स्वभाव है कि उसमें सत्ता की प्राप्ति के लिए सभी प्रकार के दूषित संघर्ष होते ही हैं और यही बात मुझे अधिक चिन्तित करने लगी। मैंने देखा कि धन, संगठन और प्रचार के साधनों के बल पर विभिन्न दल कैसे अपने को जनता के ऊपर लाद देते हैं, जनतन्त्र वास्तविक रूप में दलीयतंत्र में परिणत हो जाता है। कैसे दलीय तन्त्र अपने क्रम से स्थानिक चुनाव समितियों और निहित स्वार्थों से सम्बद्ध गुटों का राज्य बन जाता है, किस प्रकार जनतन्त्र केवल मतदान में सीमित और सिकुड़ कर रह जाता है। इन आधारों पर सर्वोदय दलीय पद्धति का विरोध करता है।

लोकनीति और लोकशक्ति में आस्था

राजनीति और शासन की शक्ति में सर्वोदयी विचारधारा विश्वास नहीं करती। क्योंकि यह दूसरे पर निर्भर रहता हैं सर्वोदय तो ऐसी व्यवस्था का समर्थक है, जो दल और सत्ता से मुक्त हो और इसे ही विनोबा भावे लोकनीति कहते हैं। राजनीति और लोकनीति के व्यापक अन्तर को स्पष्ट करते हुए प्रमुख सर्वोदयी विचारक कृष्णदत भट्ट लिखते हैं कि राजनीति में जहां शासन मुख्य है, वहां लोकनीति में अनुशासन, राजनीति में जहां नियन्त्रण मुख्य है, वहां लोकनीति में संयम, राजनीति में जहां सत्ता और अधिकारी की स्पर्द्धा मुख्य है, वहां लोकनीति में कर्तव्यों का आचरण। सर्वोदय का क्रम यही है कि शासन से अनुशासन की ओर, सत्ता से स्वतन्त्रता की ओर, नियन्त्रण से संयम की ओर, और अधिकारी की स्पर्द्धा की ओर से कर्तव्यों के आचरण की ओर बढ़ो। लोकनीति और राजनीति दोनों की अलग–अलग विचारधारा है, दोनों के उद्देश्य व सिद्धांतों में भी अंतर पाया जाता है।

लोकनीति कानून व्यवस्था को जनता व आम जनमानस के अनुसार बनाये जाने पर बल देती है। अपने एक प्रवचन में विनोबा भावे ने कहा है कि सरकार इस कार्य में कुछ नहीं कर सकती। अन्त में सरकार एक बाल्टी जैसी है, जबकि जनता एक कुएं के समान है। यदि कुएं में ही पानी नहीं होगा, तो बाल्टी में पानी कहा से आएगा। हम सीधे पानी के स्रोत अर्थात जनता तक जाएंगे जो कार्य सरकार नहीं कर सकती, वह जनता कर सकी है। आचार्य विनोबा भावे ने जनता को सर्वोच्च माना है।

एक राज्यविहीन समाज

राजनीतिक आदर्शों की दृष्टि से सर्वोदय गांधीवाद का अधिक विकसित रूप है। गांधी राज्य संस्था के कटु आलोचक थे। उनकी दृष्टि में राज्य का सबसे बड़ा दोष यह था कि वह अहिंसा पर आधारित है, इसलिए वे राज्यविहिन समाज को ही सर्वोतम मानते थे। गांधीवादी दर्शन से प्रेरणा ग्रहण करते हुए सर्वोदय के मुख्य प्रतिपादक आचार्य विनोबा भावे का लक्ष्य एक ऐसे समाज की स्थापना करना था जिसमे व्यक्ति को स्वतंत्र रहकर जीने का मौका मिले, इसके साथ शोषण न किया जाए। एक न्यायोचित व्यवस्था में शासक और शासित का कोई अन्तर ही न होगा।

जयप्रकाश नारायण और सर्वोदय के कुछ अन्य प्रतिपादकों के द्वारा जनकल्याणकारी राज्य की वर्तमान धारणा की भी आलोचना की गयी है, क्योंकि इससे शासन की शक्तियों और कार्यों में वृद्धि हो जाती है। व्यवहार में, विश्व के विभिन्न राज्यों में शासन की शक्तियां जिस प्रकार से निरन्तर बढ़ती जा रही हैं, उससे यह आलोचना उचित जान पड़ती है। सर्वोदय का अन्तिम आदर्श एक ऐसे राज्यविहीन समाज की स्थापना है, जो प्रत्येक प्रकार की सत्ता से पूर्णतया मुक्त होगा। सर्वोदय धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना पर बल देता है। ऐसे समाज का निर्माण हो जिसमें सभी लोगों के साथ एक जैसा व्यवहार हो। दादा धर्माधिकारी के शब्दों में, दण्ड निरपेक्ष राज्य का अर्थ है कि दण्ड नहीं रहेगा। दण्डाश्रित समाज नहीं रहेगा, सत्ता का या सुव्यवस्था का अधिष्ठान दण्ड नहीं होगा, लेकिन लोकसम्पत्ति होगी। क्योंकि इस अन्तिम आदर्श की स्थापना में समय लगेगा, इसलिए अन्तरिम काल में किसी न किसी रूप में शासन सत्ता बनी रहेगी।

अर्न्तराष्ट्रीयता और विश्व बन्धुत्व में आस्था

सर्वोदयी विचारधारा का कार्यक्षेत्र भारत या किसी एक राज्य विशेष तक ही सीमित नहीं वरन् यह समस्त विश्व कल्याण हेतु प्रतिपादित विचारधारा है और अन्तर्राष्ट्रीयता तथा विश्वबन्धुत्व इसका मूलाधार है। सर्वोदय तो वस्तुतः वसुवैध कुटुम्बम् के उदात्त में विश्वास करता है। सर्वोदय के अन्तर्राष्ट्रीय पक्ष को व्यक्त करते हुए जयप्रकाश नारायण लिखते हैं कि सर्वोदयी विश्व समाज में वर्तमान राष्ट्रों को क्रम से बने हुए राज्यों के लिए कोई स्थान नहीं होगा। सर्वोदयी दृष्टि विश्व दृष्टि है और गांधी के समुद्रीय वर्तुल में खड़ा हुआ व्यक्ति विश्व नागरिक है। विनोबा भावे ने भी ऐसा ही विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि दुनिया में वेग से विचार आगे बढ़ रहे हैं। धीरे–धीरे सभी देशों की सरहदें टूटने वाली हैं। अब लोगों में विश्व बंधुत्व की भावना विकसित हो रही है। इनके अतिरिक्त सर्वोदयी समाज वर्णाश्रम को भेदमूलक मानते हुए इसका विरोध करता है।

दादा धर्माधिकारी तथा काका कालेलकर ने विषेष रूप से वर्ण–व्यवस्था की समाप्ति पर बल दिया है और इस सम्बन्ध में उनका महात्मा गांधी की विचारधारा से भी कुछ मतभेद है। काका कालेलकर ने वर्ण–व्यवस्था को सामाजिक व्यवस्था हेतु प्रमुख माना है। सामाजिक जीवन में वह प्रतिस्पर्द्धा के स्थान पर परिस्पर्द्धा श्रेष्ठता की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति को अपनाने पर बल देता है। ग्रामों को जीवन की प्राथमिक और स्वावलम्बी इकाई का रूप प्रदान करना, कुटीर उद्योग–धन्धों का विकास, जीवन में श्रम की प्रतिष्ठा और स्त्री–पुरूष की समानता आदि इसके मुख्य विषय हैं। वस्तुतः सर्वोदय एक ऐसी मानवतावादी विचारधारा है, जो मानव मात्र की सद्गुण सम्पन्नता में विश्वास करती है। इसका लक्ष्य समाज में मानवीय मूल्य की स्थापना है। मानवीय जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए हृदय परिवर्तन को आधार बनाया।

राजनीतिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण और पंचायती राज की स्थापना

आचार्य विनोबा भावे ने दलीय पद्धति की बुराइयों को दूर करने के लिए विकेन्द्रीकरण पर बल दिया। उनका कथन है कि ग्राम को सामाजिक जीवन की प्राथमिक इकाई बनाया जाए और उसे ही प्रमुखता प्रदान की जाए। उनके अनुसार ग्राम पंचायतों को फिर से सबल बनाने और बहुमत निर्णय के स्थान पर सर्वसम्मत निर्णय को अपनाने का कार्य किया जाना चाहिए। जनतन्त्र को यथार्थ रूप देने के लिए आवश्यक है कि ग्राम पंचायतों के सदस्यों का चुनाव दल प्रणाली की कार्यविधियों से मुक्त जनता की सर्वसम्मति से हो। विनाबा ने आधारभूत

प्रजातंत्र के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है, इस सिद्धांत के अनुसार, ग्रसम पंचायत के सदस्यों का निर्वाचन प्रत्यक्ष रूप से होगा। विनोबा के अनुसार आधुनिक लोकतंत्र को स्वस्थता प्रदान करने और उनमें लोगों को सक्रिय भूमिका प्रदान करने का उपाय यह है कि प्रत्यक्ष चुनाव केवल ऐसे ही छोटे क्षेत्रों में हो जिनमें नागरिक एक–दूसरे को पहचान सकें। ग्राम पंचायतें, तहसील पंचायतों के सदस्यों का चुनाव करेंगी और तहसील पंचायतें, जिला पंचायतों के सदस्यों को चुनेगी। वर्तमान व्यवस्था में यह संस्थागत परिवर्तन होगा और इसमें आधारभूत ग्राम तथा नगर पंचायतों के अतिरिक्त अन्य सभी स्तरों पर सदस्यों का निर्वाचन अप्रत्यक्ष होगा। साथ ही मतदाता और प्रतिनिधि दोनों के लिए यह आवश्यक होगा कि वह शारीरिक श्रम से जीवन निर्वाह करने वाला अथवा कुछ घण्टे राष्ट्र की सेवा करने वाला हो। इसी मत के पक्षधर गांधी भी थे, उन्होंने भी मताधिकार के अनिवार्य योग्यता शारीरिक श्रम होना चाहिए न कि सम्पत्ति या पद। भारत के सभी नागरिकों को इस व्यवस्था का पालन करना चाहिए। साक्षरता या सम्पत्ति की कसौटी व्यर्थ सिद्ध हुई। शारीरिक श्रम से उन सबको अवसर मिलता है, जो राज्य के हित में शासन में भाग लेना चाहते हैं विनोबा के अनुसार शारीरिक श्रम की यह व्यवस्था राजनीतिक क्षेत्र के भ्रष्टाचार को दूर करने में बहुत अधिक सहायक होगी।

सर्वोदय के साधन

भूदान आन्दोलन, सम्पत्ति दान, ग्रामदान को सर्वोदय के साधन के रूप में अपनाया गया है।

भूदान आन्दोलन

भारत में भूदान आन्दोलन को आगे बढ़ने में विनोबा भावे का नाम प्रमुख है। भारत में भूदान यज्ञ के द्वारा हम आर्थिक और राजनीतिक दोनों तरह के विकेन्द्रीकरण को और इन दोनों प्रकार के केन्द्रित शक्तियों को समाप्त करना चाहते हैं। भूदान यज्ञ के द्वारा हम उत्पादन का मुख्य साधन जमीन जन–जन के हाथ में पहुंचा देते हैं। आर्थिक केन्द्रीकरण यह कार्य यज्ञ में मिली हुई जमीन के बंटवारे के हमारे तरीके से और उसके बाद गांव में हम जो व्यवस्था कायम हुई देखना चाहते हैं उससे होता है भूमिदान यज्ञ के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की समस्या का समाधान मिलजुलकर करना चाहिए। भूदान के सम्बन्ध में जयप्रकाश नारायण ने बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है कि यह आर्थिक और सामाजिक क्रान्ति लाने का गांधीवादी मार्ग है, यह नवीन जीवन का सिद्धान्त और व्यवहार है, वह एक नवीन सामाजिक दर्शन है, यह एक नवीन मानवता तथा एक नवीन सभ्यता का सूत्रपात है। विनोबा भूदान यज्ञ का प्रारम्भ करते हुए कहा था कि व्यक्तियों के द्वारा स्वीकार कर लिया जाना चाहिए कि समस्त धरती ईश्वर की है। इस दान किये हुए भूमि से गरीबों व दीन–दुखियों की सेवा की जा सकेगी। अगर समस्त धरती पर सामाजिक रूप में स्वामित्व हो तो सारा असंतोष दूर हो जाएगा और प्रेम तथा सहयोग के युग का आगमन होगा। मैं चाहता हूं कि व्यक्तियों के द्वारा प्रारम्भ में अपनी भूमि का कुछ भाग दान किया जाए। मनुष्य का कुछ नहीं है, यह प्रकृति प्रदत्त संसाधन के रूप में मनुष्य को प्राप्त हुआ है।

सर्वोदय सम्मेलन और भूदान

भारत के दक्षिणी राज्य आन्ध्र प्रदेश में श्रामपल्ली नामक स्थान पर अप्रैल 1951 में सर्वोदय सम्मेलन का आयोजन हुआ। उस समय आचार्य भावे तेलपाना में पंचमपल्ली स्थान पर ठहरे हुए थे। इस समय अनेक हरिजन और अन्य व्यक्ति आचार्य भावे से मिले और उन्हें अपनी भूमिहीनता के कष्ट सुनाए। यह घटना सर्वोदय आन्दोलन के इतिहास में क्रान्तिकारी सिद्ध हुई और इससे प्रेरित होकर आचार्य भावे ने भूदान यज्ञ प्रारम्भ किया। यहाँ के निर्धन भूमिहीन व्यक्तियों ने विनोबा भावे से 80 एकड जमीन माँग की तो इस महान नेता ने वहां उपस्थित व्यक्तियों से पूछा कि क्या कोई व्यक्ति इतनी भूमि दे सकता है? सर्वोदय नेता की बात का उत्तर पंचमपल्ली के ही रामचन्द्र रेड्डी ने तुरन्त 100 एकड़ भूमि का दान कर दिया। इस प्रकार 18 अप्रैल, 1951 को भूदान यज्ञ का प्रारम्भ हुआ। इसके बाद पास के ही एक गांव में उन्हें 60 एकड़ भूमि की भेंट प्राप्त हुई। विनोबा की बात का आंध्र प्रदेश की जनता ने सम्मान किया और उन्हें इस बात का विश्वास हो गया कि व्यक्तियों की अन्तरात्मा को परिवर्तित कर अहिंसक ढंग से क्रान्ति लाई जा सकती है। तेलंगाना में जिसे साम्यवादियों का गढ़ समझा जाता था, आचार्य ने 51 दिन में 12,201 एकड़ भूमि प्राप्त की। यह अपने आप में एक बड़ी विजय थी और अब विनोबा ने भूदान में 50 मिलियन एकड़ भूमि प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया। इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने में विनोबा भावे का आकट्य योगदान है। भूदान आंदोलन की निम्न विशेषताएँ है –

न्याय और नैतिकता पर आधारित

भूदान न्याय और नैतिकता के सिद्धान्त को अपनाने पर जोर देता है। इसके अन्तर्गत भूमि का दान दया के रूप में नहीं, वरन् इसलिए किया जाता है कि न्याय की यह मांग है भूदान नेता का विचार है कि समाज में पर्याप्त सद्भावना विद्यमान है, आवश्यकता केवल इस बात की है व्यक्तियों की सद्प्रवृत्तियों को विकसित किया जाए। इसको विकसित करके नैतिकता तथा न्याय की स्थापना की जा सकेगी।

प्रन्यास धारण

भूदान सम्पत्ति और विशेषतया भू–सम्पत्ति के सम्बन्ध में प्रन्यास सिद्धान्त को मानता है। यह विश्वास करता है कि समस्त भूमि ईश्वर की है और मानव इस पर प्रन्यासी के रूप में ही अधिकार रखते है।

नवीन दृष्टिकोण को जन्म

नवीन दृष्टिकोण को अपनाकर भूदान में सामाजिक और आर्थिक मान्यताओं में परिवर्तन लाया जा सके। भूदान भूमि के अन्तिम स्वामित्व के प्रश्न को हल करेगा। एक व्यक्ति को केवल उतनी ही भूमि अपने पास रखने का अधिकार हो सकता है, जितनी कि उसे आवश्यकता है और अपनी आवश्यकता से अतिरिक्त भूमि उसे समाज को लौटानी होगी। भूदान यज्ञ के निर्धन

किसानों से भी भूमि दान के रूप में प्राप्त की जाती है, जिससे सबके विचारों में परिवर्तन लाया जा सके। भूदान की विशेषता यह है कि इसके द्वारा दबाव या विनाष के आधार पर नहीं, वरन् ह्रदय परिवर्तन के आधार पर आर्थिक और सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया जाएगा। भारत के महान दार्शनिक एवं शिक्षाविद् डॉ. राधाकृष्णन ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में भूदान को 'सहमति से क्रान्ति' की संज्ञा दी हैं

सम्पत्ति दान

विनोबा के अनुसार नकद राशि अनेक समस्याओं को जन्म देती है। यही हमारे देश के पतन का प्रमुख कारण रहा है। किंतु उनके विचार में परिवर्तन हुआ और उन्होंने सोचा कि बीज–खाद और पशु खरीदने के लिए धन की आवश्यकता होती है अतः अनुभव के आधार पर उन्होंने अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन किया और नवीन दृष्टिकोण से सम्पत्ति दान या धन की भेंट की धारणा को जन्म दिया। 23 अक्टूबर 1952 को पाटलिपुत्र नगर में उन्होंने सम्पत्ति दान आंदोलन प्रारम्भ करते हुए कहा कि सम्पत्ति दान, भूदान यज्ञ की पूर्ति के लिए आवश्यक है। इस आन्दोलन के अन्तर्गत उन्होंने व्यक्तियों से अपनी आय का शष्ठांश दान में देने की अपील की।

ग्रामदान और ग्रामराज

भूमिदान के अलावा विनोबा ग्रामदान और ग्रामराज पर बल दिया जिसका तात्पर्य है एक पूरे गांव की भेंट प्रदान करना। प्रारम्भ में व्यक्तिम अपनी भूमि का एक टुकड़ा देंगे किंतु अन्त में वे अपनी सारी भूमि दे देंगे। इस ग्रामदान के आधार पर ग्रामराज की स्थापना की जाएगी जब ग्रामदान होगा, तो भूमि पर किसी का भी व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं रहेगा और समस्त समुदाय को सामूहिक रूप से भूमि पर अधिकार प्राप्त होगा।

ग्रामदान आन्दोलन 1952 में उत्तर प्रदेश के मानग्रोथ गांव के समस्त निवसियों द्वारा अप्रत्याशित रूप से अपना ग्राम दान करने के साथ आरंभ हुआ। इसके बाद उड़ीसा में 20 जनवरी, 1953 को कटक जिले में मानपुर पहला ग्राम था, जिसे दान के रूप में दिया गया। इसके बाद यह आन्दोलन कोरपुट जिले में फैला और 23 जनवरी, 1955 को विनोबा द्वारा उड़ीसा में प्रवेश करने पर 26 ग्राम दान के रूप में प्राप्त किए गए। जिस प्रकार गांधी ने पंचायती राज व्यवस्था पर बल दिया था, उसी प्रकार आचार्य विनोबा भावे ने ग्रामराज पर बल दिया।

ग्रामराज के लक्षण ग्रामराज के प्रमुख लक्षण निम्न है –

1. हिंसा और दमन के लिए ग्रामराज में कोई स्थान नहीं होगा बल्कि अहिंसा के लिए स्थान होगा। इसमें शक्ति का केन्द्रीकरण नहीं वरन् गांवों के माध्यम से शक्ति का विकेन्द्रीकरण होगा, जिनमें प्रत्येक गांव पूर्ण और अपने आप में एक लघु राज्य होगा। प्रत्येक गांव में एक सामान्य ग्राम परिषद् होगी, जिसमें प्रत्येक परिवार अपना एक प्रतिनिधित्व भेजेगा। इस प्रकार अहिंसक ढंग से समाज की व्यवस्था का संचालन किया जाएगा। यह व्यवस्था ग्राम का समुचित विकास कर सकती है।
2. इसमें यह भी प्रावधान है कि उच्च के द्वारा निर्धन का शोषण नहीं होगा। इसमें प्रतिस्पर्द्धा नहीं, वरन् पारस्परिक सहयोग और समन्वय होगा। ग्रामराज में कोई राजनीतिक दल भी नहीं होंगे और राजनीति का स्थान लोकनीति अर्थात् व्यक्तियों के कल्याण की प्रवृति के द्वारा ले लिया जाएगा।
3. परिवार की उन्नति में जिस प्रकार सभी सदस्यों का योगदान होता है, उसी प्रकार ग्रामराज में सभी व्यक्ति समस्त समुदाय के कल्याण हेतु कार्य करेंगे। प्रत्येक कृषक भूमि के एक टुकड़े पर कार्य करेगा। सभी के द्वारा आवश्यकतानुसार एक–दूसरे की सहायता की जाएगी। ग्रामराज में समस्त समुदाय सुखी होगा। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ आपसी सद्भाव व भाईचारे का भाव रखेगा, एक व्यक्ति दूसरे का शोषण नहीं करेगा। इस समुदाय में संग्रह की प्रवृति नहीं होगी और मेरे–तेरे की भावना का अन्त हो जाएगा। वर्तमान समय में व्यक्ति जिस प्रकार से स्वयं के लिए जीता है और अपनी योग्यताओं का अपने लिए ही प्रयोग करता है, ग्रामराज में प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यताओं का सामान्य कल्याण में प्रयोग करेगा। एम. चौधरी के शब्दों में, प्रत्येक अपना सर्वस्थ समुदाय को प्रदान कर देगा।
4. इसमें स्वतंत्रता समानता और आपसी भाईचारे का वातावरण होगा क्योंकि इसमें राजनीतिक दल, जमींदार या पूंजीपतियों जैसे शोषण तत्व नहीं होंगे। स्वषासित ग्रामीण समुदायों में जनता सम्प्रभु होगी। व्यक्ति वर्ग और जाति की भावनाओं से भी पूर्णतया स्वतन्त्र होंगे। ग्रामराज में सभी व्यक्तियों को धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त होगी और धर्म या जाति के आधार पर कोई भी भेद–भाव नहीं किया जाएगा।

भूदान, सम्पत्ति दान ग्रामदान और ग्रामराज के अतिरिक्त सर्वोदय आन्दोलन के कार्यक्रम के अन्तर्गत बुद्धिदान, श्रमदान, साधनदान और जीवनदान आदि को भी अपनाया गया। इसका कारण यह है कि समाज के उत्पादन में इन सभी का किसी न किसी रूप में योगदान अवष्य होता है। जीवनदान का तात्पर्य यह है कि जीवनदान करने वाले व्यक्ति अपनी समस्त बुद्धि श्रम और शक्ति का प्रयोग भूदान एवं सर्वोदय की सेवा में करेंगे। सर्वप्रथम जयप्रकाश ने अप्रैल 1954 में सर्वोदय को अपना जीवन दान दिया। तत्पष्चात् विनोबाजी ने भी भूदान यज्ञमूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति के लिए अपना जीवन दान दिया। विनोबा की प्रेरणा से प्रभावित होकर कई सर्वोदयी आन्दोलन के समर्थकों ने भी अपना जीवनदान देने की बात की।

सर्वोदयी विचारधारा और कार्यक्रम का मूल्यांकन

सर्वोदय के गुण

सर्वोदय के गुण निम्न है –

सर्वोदय समस्त मानव जाति के लिए

सर्वोदय समस्त मानव जाति के लिए है न कि किसी एक देश व काल के लिए। विनोबा भावे लिखते है, सर्वोदय भारत का अपना शब्द है और भारत की अपनी वस्तु है, पर ऐसा शब्द या सही वस्तु नहीं है जो किसी दूसरे देश या काल में लागू न हो सके। देशकाल परिस्थिति के भेदानुसार उसकी बाहरी पद्धति में अन्तर होता रहेगा, लेकिन उसका आन्तरिक रूप शाश्वत रहेगा। सर्वोदयी विचारधारा तो जीवन के चिरन्तन मूल्यों पर आधारित होने के कारण शाष्वत महत्व की विचारधारा है।

उच्च आदर्श

इसमें उच्च आदर्श व शांतिपूर्ण रहने के तरीके पर बल दिया गया है। सर्वोदय का आदर्श महान है और सर्वोदय के उस आदर्श का अपना महत्व है। इस सम्बन्ध में सर्वोदयी विचारक कृष्णदत्त भट्ट ने लिखा है कि सबका उदाय कोरा स्वप्न, कोरा आदर्श नहीं है यह वह आदर्श व्यवहार है जिसे अमल में लाया जा सकता है। सर्वोदय का आदर्श ऊँचा है, यह ठीक है, परन्तु न तो वह अप्राप्य है और न असाध्य है, वह प्रयत्न साध्य है।

सामान्य कल्याण का एक साधन

सर्वोदय में सेवा भावना की झलक दिखलाई पड़ती है। सर्वोदय सत्ता और शोषण की राजनीति का विरोध करता है। इसके अन्तर्गत राज्य, सत्ता और शोषण का नहीं वरन् सेवा का एक साधन होगा। ग्रामराज अहिंसा पर आधारित है ओर सर्वोदय में सभी के हित की भावना निहित है। भूदान, सम्पत्ति दान और ग्रामदान ये पद्धतियां हृदय परिवर्तन के नैतिक साधन के रूप में हैं। सर्वोदय भावना को ग्रहण कर लेने पर धनी और गरीब सभी निजी सम्पत्ति के प्रति मोह का त्याग कर देंगे, इससे समाज का कल्याण हो सकता हैं।

नवीन सामाजिक और आर्थिक मूल्य

सामाजिक और आर्थिक मूल्यों के विकास पर सर्वोदय बल देता है। इसमें व्यक्ति सभी के हित के लिए कार्य करेंगे। और समस्त समुदाय में पारस्परिक भावना होगी। इस प्रकार सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र का समस्त ढांचा पूर्णतया परिवर्तित हो जाएगा।

भूदान भूमि का सुधार में सहायक

भूदान आन्दोलन के प्रणेता आचार्य विनोबा भावे ने इस आन्दोलन के अलावा ग्रामदान व भूदान इन दो आन्दोलनों का भी संचालन किया। इनक कार्यक्रमों ने एक ऐसा वातावरण तैयार किया जिसके आधार पर भू–स्वामित्व की व्यवस्था में कानूनी ढंग से सुधार किया जा सके। इस योगदान के विषय में पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि सबसे महत्वपूर्ण परिणाम जो इस आन्दोलन का निकला, वह उसके द्वारा निर्मित वातावरण का है, जो भूमि व्यवस्था में सुधार के लिए कानून बनाने में सहायक होता है, लेकिन उस विषय में यह व्यक्तियों के मानस को ही बदल देता है। भूमि सुधार के लिए कानून आवश्यक है लेकिन जनता के मानस को बदलना मूलतः उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए यह आन्दोलन अधिक महत्वपूर्ण है।

व्यवहार में सर्वोदयी समाज की स्थापना बहुत अधिक कठिन होते हुए भी विश्व सर्वोदयी विचारकों के प्रति इस बात के लिए कृता है कि उन्होंने मानव जाति के सम्मुख ऐसे महान आदर्श रखे, जिनकी ओर बढ़ने का प्रयत्न विश्व के द्वारा किया जाना चाहिए। इस आदर्श को अपनाकर इसके लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

सर्वोदय के दोष

सर्वोदयी विचारधारा और कार्यक्रम के प्रमुख रूप से निम्नलिखित दोष बतलाए जाते हैं –

एक ही देश में सर्वोदय को अपनाना संभव नहीं

सर्वोदय समाज के विकास हेतु सम्पूर्ण विश्व को ध्यान देना होगा। किसी एक देश में सर्वोदय को अपनाना संभव नहीं है। जिनकी सर्वोदय से कोई संगति नहीं है एक ही राज्य में सर्वोदयी समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। जब तक विश्व के सभी राज्य में सर्वोदय के विचार को स्वीकार न कर लें, भारत जैसे एक ही राज्य में सर्वोदयी समाज की स्थापना की आशा बहुत अधिक धूमिल है। प्रष्न यह है कि जब हिंसा पर आधारित किसी वर्तमान राज्य के द्वारा सर्वोदयी समाज वाले किसी राज्य पर आक्रमण किया गया तो स्थिति क्या होगी?

दल प्रणाली, निर्वाचन व्यवस्था, लोकतन्त्र और राज्य की आलोचना उचित नहीं

वर्तमान, लोकतंत्र में दल प्रणाली को सर्वोदयी विचारक सही नहीं मानते थे। ये लोग जनता पर अत्याचार करते हैं। अतः इस तथाकथित लोकतन्त्र को समाप्त कर एक दलविहीन प्रजातंत्र और राज्यविहीन समाज की दिषा में आगे बढ़ने की चेष्टा की जानी चाहिए। लेकिन उनकी यह धारणा व्यावहारिक नहीं है। दलविहीन प्रजातंत्र शब्द सुनने में अच्छा लगता है लेकिन व्यवहार में राजनीतिक दल ही वे एकमात्र साधन है, जिनके आधार पर लोकतंत्र की स्थापना की जा सकती है। इसके अतिरिक्त राज्यविहीन समाज में कैसी व्यवस्था रखी जाए इस पर भी सर्वोदय कोई जवाब नहीं दे सका है।

सर्वोदय की धारणा व्यावहारिक नहीं

सर्वोदय को व्यावहारिक रूप में नहीं अपनाया जा सकता। सर्वोदय का आदर्श निष्चित रूप से बहुत अधिक उच्च है और सैद्धान्तिक दृष्टि से उनमें कोई दोष नहीं बतलाया जा सकता, लेकिन विश्व की जो वास्तविक स्थिति है उसके अन्तर्गत महात्मा गांधी और अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रतिपादित इन महान आदर्शो के आधार पर समाज की रचना लगभग असंभव ही है। मानवीय प्रकृति जैसा कि हम वर्तमान समय में देखते हैं, स्वार्थ मोह और लगाव की भावना को छोड़ने में असमर्थ हैं और ऐसी स्थिति में अहिंसा तथा पूर्ण सहयोग की भावना पर आधारित समाज की स्थापना संभव प्रतीत नहीं होती। हम नैतिकता के उस धरातल तक नहीं पहुँच सके हैं, कि कानून की सहायता के बिना एक पूर्ण अहिंसक क्रान्ति सफल हो सके। विश्व में अब तक कभी भी ऐसे समाज की स्थापना नहीं हो सकी है जिसमें सभी व्यक्ति ऐसा सोचें कि वे एक ही परिवार के सदस्य हैं।

यह सिद्धान्त बहुत अधिक कल्पनात्मक है और इसमें बहुत अधिक संदेह है कि उन्हें इस धरती पर प्राप्त किया जा सकता है। यदि भारत को भी उदाहरण रूप में माना जाए तो अधिकांश व्यक्ति न तो अपने नैतिक कल्याण के प्रति उत्सुक हैं और न ही सही अर्थो में अपने भौतिक कल्याण के प्रति। बहुत से ऐसे पहलू हैं, जिस कारण इस आन्दोलन में दोष व्याप्त हैं।

हृदय परिवर्तन बहुत कठिन

आज के लोगों में स्वार्थ की भावना व्याप्त है जबकि सर्वोदय समाज हृदय परिवर्तन पर आधारित है। महात्मा गांधी और विनोबा भावे जैसे महान व्यक्ति उन थोड़े से व्यक्तियों का हृदय परिवर्तन तो कर सकते हैं जो उनके प्रत्यक्ष सम्पर्क और प्रभाव में आते हैं लेकिन सामान्य मिट्टी के बने व्यक्ति न तो स्वंय निस्वार्थी हो सकते हैं और न दूसरों को निस्वार्थी बना सकते हैं। महान बौद्धिक और प्रशासनिक क्षमताओं या अन्य प्रकार के व्यक्तियों की खोज कठिन नहीं है, किंतु पूर्णतया निस्वार्थी व्यक्तियों की खोज, जो प्रतिक्षण सर्वोदय का ही ध्यान रखते हों, निश्चित रूप से बहुत अधिक कठिन है।

भूदान के आधार पर भूमि समस्या का समाधान संभव नहीं

सर्वोदय कार्यक्रम का सबसे प्रमुख अंग भूदान है और इसके सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि भूदान भूमि समस्या का कोई हल प्रस्तुत नहीं करता है।

1. यद्यपि यह उचित नहीं है कि जिन व्यक्तियों द्वारा अपनी भूमि दान में दी गयी, उन व्यक्तियों के मूल उद्देश्य पर शंका की जाए, किंतु यह एक तथ्य है कि भूदान के अन्तर्गत अनेक मामलों में संदिग्ध उपयोगिता वाली भूमि दान में दी गयी। ऊसर व बंजर भूमि को भी भूदान किया। जिस पर स्वामित्व सम्बंधी विवाद चल रहा था।
2. यह आरोप लगाया जाता है कि जिन व्यक्तियों ने भूदान किया, उन्होंने हृदय परिवर्तन के कारण नहीं वरन् साम्यवादियों के आतंक और भय के कारण भूदान किया।
3. यह कहा जाता है कि यदि यह आन्दोलन सफल होता है तो इससे भूमि के छोटे–छोटे टुकड़े हो जाएंगे जिससे न केवल समाज वरन् राष्ट्रीय अर्थ–व्यवस्था को भी अत्यधिक क्षति पहुंचेगी।
4. भूदान के सम्बन्ध में सत्य रूप में यह कहा जाता है कि इसके आधार पर होने वाले परिवर्तन की गति बहुत धीमी होती है। राममनोहर लोहिया ने इस सम्बन्ध में कहा था कि यह कार्यक्रम बहुत अच्छा है परन्तु इससे 300 वर्ष में कार्य पूरा होगा। इसकी सबसे बड़ी कमी थी, इसमें गरीबों से भी भूमि को दान के रूप में लिया जाता था।

आचार्य विनोबा भावे ने भूदान आन्दोलन में 5 करोड़ एकड़ भूमि दान में प्राप्त करने का संकल्प लिया गया था परन्तु मात्र 10 प्रतिशत ही भूमि दान के रूप में मिल सकी। स्वयं विनोबा जी ने भी 1970 के बाद अपने भूदान और ग्रामदान कार्यक्रम की असफलता को स्वीकार करते हुए 1970 के बाद से ही पवनार आश्रम में सन्यास लेकर अपने आप को आश्रम की सीमा में ही रखना ग्रहण कर लिया है। इस प्रकार भूदान तथा ग्रामदान के कार्यक्रमों को अर्धविराम तो लग ही गया हैं।

इस आन्दोलन पर भी लोगों ने तरह–तरह के सवाल उठाना प्रारम्भ कर दिये थे। सर्वोदय के सम्बन्ध में मूल प्रश्न यह है कि सर्वोदय के परिणाम स्वरूप व्यक्ति सुखी होंगे और पृथ्वी पर स्वतन्त्रता समानता और भ्रातृत्व से पूर्ण स्वयं की स्थापना होगी, इस बात पर विश्वास किया जा सकता है। किंतु प्रश्न यह है कि इस सर्वोदयी समाज की स्थापना किन साधनों के आधार पर संभव है, जब तक वास्तविकताओं को बिल्कुल ही भुला दिया जाए, इसका निष्पक्ष उत्तर देना बहुत कठिन कार्य है।

सर्वोदय में नवीनतम प्रवृतियां डाकुओं का आत्मसमर्पण और जन आन्दोलन सर्वोदय मूलभूत रूप में हृदय परिवर्तन का दर्शन है और इस क्षेत्र में भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् 1948–49 से लेकर 1960 तक सर्वोदय ने सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में रचनात्मक कार्यक्रम को ही अपनाया और राजनीतिक तथा उसके सभी रूपों की पूर्णतया अपेक्षा की गयी लेकिन 1970 के बाद जब सर्वोदयी कार्यक्रम पर मनन और उसके मूल्यांकन का अवसर आया तो कुछ सर्वोदयी नेताओं ने अनुभव किया कि राजनीति की उपेक्षा करने से जीवन पर राजनीति का प्रभाव समाप्त नहीं हो जाता है और राजनीति की अपेक्षा सर्वोदय आन्दोलन की आंशिक सफलता का ही कारण बनी है। इस सम्बन्ध में यह स्मरणीय है कि भूदान और ग्रामदान आन्दोलन का प्रारम्भ जिन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया था, वह अपने उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सका। ऐसी स्थिति में अनेक सर्वोदयी नेताओं ने यह सोचा कि किसी न किसी रूप में राजनीति दलीय राजनीति नहीं, वरन् जन राजनीति में भाग लेकर राजनीति को स्वस्थ दिशा प्रदान करने की चेष्टा प्रदान की जानी चाहिए।

सर्वप्रथम गोपाराजू रामचन्द्र राओ, जिन्हें गोरा के नाम से पुकारा जाता है ने 9 मई, 1971 को नासिक में सर्वोदय समाज के उन्नीसवें अधिवेशन में इसी चिन्तन को अपनाया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि सर्वोदय आन्दोलन का अराजनीतिक दृष्टिकोण ही इसे जीवन की मुख्य धारा से पृथक करने के लिए उत्तरदायी है और आन्दोलन को सुदृढ़ बनाने के लिए राजनीति में भाग लेने की आवश्यकता है। इन्होंने आगे कहा है कि यदि हमने राजनीतिक दृष्टिकोण से सोचा होता तो हम विकेन्द्रकरण को प्रभावपूर्ण ढंग से लागू कर सकते थे और लाभकारी ढंग से सरकार को लोगों के नियन्त्रण में रख सकते थे। हमारी राजनीति के प्रति उदासीनता ने राजनीतिक शक्ति को व्यावसायिक राजनीतिज्ञों के हाथों में सौंप दिया है। ग्रामदान आन्दोलन सिद्धान्त रूप में अच्छा होते हुए भी राजनीतिक पूरक की कमी के कारण इसमें विशेष प्रगति नहीं हो सकी।

जन आन्दोलन के कारण राजनीतिक क्षेत्रों में अस्थिरता दिखायी देने लगी। देश में आपातकाल घोषित किया गया। यद्यपि सर्वोदय सामान्यतया इस प्रकार की

राजनीतिक घटनाओं पर टिप्पणी नहीं करता, लेकिन आपातकाल में भारतीय राजनीति की दूषित प्रवृत्तियों को जिस प्रकार से नियंत्रित किया गया, उससे प्रभावित होकर भावे ने आपातकाल को अनुशासन पर्व की संज्ञा दी। आपातकाल की इस स्थिति को सर्वोदय अधिक समय तक जारी रहने के पक्ष में नहीं था। इस दृष्टि से सर्वोदय की चेष्टा है कि भारत में पुनः सामान्य राजनीतिक स्थिति स्थापित हो जाए। सर्वोदय की चेष्टा है देश में निर्दलीय बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा राजनीतिक और सामाजिक जीवन में अधिक निष्पक्ष और अधिक सक्रिय भूमिका निभाई जानी चाहिए। सर्वोदयी समाज निष्पक्ष व आदर्श समाज की स्थापना पर बल देता है।

प्रमुख सुझाव

गांधी के सर्वोदय दर्शन को और अधिक प्रभावी एवं व्यावहारिक बनाने के लिए शोधकर्ता द्वारा निम्न सुझाव दिये जा सकते है–

1. सर्वोदय का क्षेत्र एक देश विशेष नहीं बल्कि वैश्विक होना चाहिए अर्थात विश्व के सभी राज्यों में सर्वोदय के विचार को स्वीकार किया जाना चाहिए।
2. सर्वोदयी विचारकों को लोकतंत्र, दलीय प्रणाली तथा निर्वाचन व्यवस्था की आलोचना छोड़कर वर्तमान समय में इनका समर्थन करना चाहिए।
3. यद्यपि सर्वोदय का आदर्श उच्च है किन्तु व्यावहारिक रूप से इसे अपनाना कठिन है? इसलिए इसकी पूर्ण अपेक्षा की जगह जहां तक व्यावहारिक स्तर पर इसे अपनाना संभव हो, अपनाना चाहिए।
4. लोगों का सर्वोदय के लिए हृदय परिवर्तन करना कठिन है किन्तु शिक्षा के माध्यम से ऐसे विचार व्यक्ति में बचपन से ही डाले जाने चाहिए।
5. आज भूदान की जगह सम्पत्तिवान लोगों से सबकी भलाई के लिए उनकी सम्पत्ति में से कुछ सम्पति का दान करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सर्वोदय में केवल भौतिक विकास की संकल्पना ही निहित नहीं है प्रत्युत सर्वोदय की धारणा की परिधि में मानव जीवन के सभी पक्ष अनिवार्यतः समाविष्ट है। सर्वोदय मानवीय नैतिकता के अद्वैतवादी अभिज्ञान का पराकाष्ठा है। सर्वोदयी तत्व ज्ञान का विचारधारा व कार्यक्रम के स्तर पर नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक रूपान्तरण एक विषद् विषय है। इसके आयाम बहुविध है। जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, राजनैतिक व आर्थिक सन्दर्भ स्वतः समाविष्ट है।

सन्दर्भ ग्रंन्थ सूची

हर्ष, हरदान, गांधीः विचार और दृष्टिः श्याम प्रकाशन, जयपुर, 1996

चौहान, संदीप सिंह , भारत में दलित चेतना, आर बी एस ए पब्लिशर्स, जयपुर 2004

यादव, डी.एस., गांधी दर्शन : विविध आयाम, आस्था प्रकाशन, जयपुर, 2012

चन्देल, धर्मवीर, गांधी चिन्तन के विभिन्न पक्ष, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2012

गिरी, राजीव रंजन, गांधीवाद रहे ना रहे, अनन्या प्रकाशन, दिल्ली, 2018.